पत्रकारिता के छात्रों द्वारा सम्पादित

सुरलोक समाचार

नई दृष्टि, नए विचार

हिन्दी संदर्शिका

श्री गुरु नानक देव खालसा महाविद्यालय, देव नगर, नई दिल्ली-110005 | दिसम्बर, 2024 | पृष्ठ संख्या - 1

>> गतिविधियाँ | >> संपादकीय | >> विद्यार्थी विशेष

प्रदूषण की गिरफ्त में दिल्ली: समाधान की तलाश

शाश्वत सृजन
हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार तृतीय वर्ष

भारत की राजधानी दिल्ली अपनी ऐतिहासिक धरोहरों और सांस्कृतिक विविधता के लिए जानी जाती है, किंतु आज यह शहर प्रदूषण के गहरे संकट से जूझ रहा है। यमुना नदी का प्रदूषण और वायु प्रदूषण ये दोनों समस्याएँ मिलकर न केवल पर्यावरण पर बल्कि दिल्लीवासियों के स्वास्थ्य, जीवनशैली और शहर के विकास पर गहरा असर डाल रही हैं।

यमुना भारत की पवित्र नदियों में से एक है, जिसे दिल्ली की जीवनरेखा कहा जाता है। यह नदी न केवल पीने के पानी का स्रोत है, बल्कि कृषि और अन्य दैनिक जरूरतों के लिए भी उपयोग में आती है। दुर्भाग्यवश, यह नदी अब एक गंदे नाले का रूप ले चुकी है। वर्तमान में यह अत्यधिक प्रदूषित हो चुकी है और इसके जल में विषैले तत्वों का स्तर तेजी से बढ़ रहा है। औद्योगिक कचरा, रसायन और प्लास्टिक जैसे प्रदूषक बिना किसी शोधन के सीधे इस नदी में प्रवाहित किए जाते हैं। दिल्ली के 18 नालों में से लगभग 80% गंदा पानी बिना साफ किए यमुना में गिरता है। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (CPCB) के अनुसार, दिल्ली में यमुना का 22 किलोमीटर लंबा हिस्सा सबसे अधिक प्रदूषित है। इस हिस्से में पानी में ऑक्सीजन की भारी कमी और भारी धातुओं की अधिकता के कारण जल जीवन पर गंभीर संकट उत्पन्न हो गया है। दिल्ली की बढ़ती जनसंख्या और तीव्र शहरीकरण ने यमुना पर अत्यधिक दबाव डाला है। नदी की यह गंदगी न केवल पर्यावरण को नुकसान पहुँचा रही है, बल्कि शहर की जल आपूर्ति को भी प्रभावित कर रही है। यमुना में फॉस्फेट और नाइट्रेट जैसे रसायनों की अधिकता से उसमें झाग बनने लगता है, जो जलचक्र को प्रभावित करता है और जलीय जीवों के लिए अत्यंत घातक सिद्ध होता है।

वायु प्रदूषण की समस्या भी दिल्ली में गंभीर होती जा रही है। यहाँ की वायु गुणवत्ता लंबे समय से चिंता का विषय रही है। विशेष रूप से सर्दियों में वायु गुणवत्ता सूचकांक (AQI) 'गंभीर' स्तर तक पहुँच जाता है। इस मौसम में ठंडी हवा प्रदूषकों को जमीन के निकट रोके रखती है, जिससे स्मॉग बनता है। यह स्मॉग लोगों को साँस लेने में तकलीफ, आँखों में जलन और फेफड़ों की बीमारियों का शिकार बना देता है। वायु प्रदूषण के दीर्घकालिक प्रभावों में कैंसर, हृदय रोग और अस्थमा जैसी गंभीर बीमारियाँ शामिल हैं। इस संकट के प्रमुख कारणों में वाहनों से निकलने वाला धुआँ, निर्माण कार्यों से उठने वाली धूल, पराली जलाने से निकलने वाला धुआँ और औद्योगिक उत्सर्जन प्रमुख हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट के अनुसार, दिल्ली दुनिया के सबसे प्रदूषित शहरों में शामिल है। वायु में मौजूद PM2.5 और PM10 कणों की अत्यधिक मात्रा श्वसन संबंधी समस्याएँ, हृदय रोग और फेफड़ों के कैंसर जैसी बीमारियों का कारण बनती है। बच्चों और बुजुर्गों पर इसका प्रभाव विशेष रूप से घातक होता है।

इन समस्याओं के समाधान हेतु विभिन्न उपाय अपनाए जा सकते हैं। यमुना को नया जीवन देने के लिए सबसे पहले सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट की संख्या बढ़ानी होगी ताकि गंदे पानी को शुद्ध करके नदी में प्रवाहित किया जा सके। साथ ही, औद्योगिक कचरे को नदी में बहाने पर सख्त प्रतिबंध लगाना होगा। आम नागरिकों को भी यह समझना होगा कि नदी को साफ रखना उनकी भी जिम्मेदारी है। वायु प्रदूषण की बात करें तो पराली जलाने के विकल्पों को प्रोत्साहित करना होगा। सार्वजनिक परिवहन को सुलभ और मजबूत बनाना होगा तथा इलेक्ट्रिक वाहनों को बढ़ावा देना चाहिए। निर्माण स्थलों और उद्योगों से होने वाले प्रदूषण पर सख्त निगरानी जरूरी है।

यह स्पष्ट है कि इन समस्याओं का समाधान केवल सरकार की जिम्मेदारी नहीं है। आम जनता को भी इस दिशा में सक्रिय भागीदारी निभानी होगी। जनजागरूकता, कठोर कानूनों का पालन और सामूहिक प्रयास ही इस संकट से उबरने का मार्ग दिखा सकते हैं। यदि समय रहते उचित कदम नहीं उठाए गए, तो आने वाली पीढ़ियों को एक अस्वस्थ और अस्थिर पर्यावरण मिलेगा। हमें अपनी जीवनशैली में बदलाव लाकर स्वच्छ, स्वस्थ और हरित दिल्ली के निर्माण की दिशा में योगदान देना होगा। तभी जाकर दिलवालों की दिल्ली सचमुच एक स्वच्छ, स्वस्थ और जबरदस्त शहर बन पाएगी।

बांग्लादेश में सत्ता परिवर्तन: छात्र आंदोलन की लहर ने हिला दी राजनीतिक नींव।

अम्बर पाण्डेय
हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार तृतीय वर्ष

बांग्लादेश में 2024 का वर्ष राजनीतिक उथल–पुथल और अस्थिरता का पर्याय बन गया। लंबे समय से सत्ता पर काबिज प्रधानमंत्री शेख हसीना को 5 अगस्त के दिन देश छोड़ना पड़ा, जब छात्र आंदोलन की तेज लहर और शासन विरोधी आक्रोश ने उनकी सरकार की नींव हिला दी। हसीना, जो 2009 से लगातार प्रधानमंत्री थीं, ने जनवरी 2024 में हुए आम चुनावों में भारी बहुमत से जीत का दावा किया था। हालांकि इस चुनाव की वैधता शुरू से ही विवादों में रही, क्योंकि प्रमुख विपक्षी दलों ने इसे निष्पक्ष न मानते हुए चुनावों का बहिष्कार किया था। बांग्लादेश नेशनल पार्टी (BNP) के अनेक नेताओं और कार्यकर्ताओं को चुनाव से पहले हिरासत में ले लिया गया था, जिससे राजनीतिक वातावरण और भी तनावपूर्ण हो गया।

हालांकि हसीना सरकार के दौरान बांग्लादेश ने आर्थिक विकास और बुनियादी ढांचे में प्रगति की, लेकिन यह भी सच है कि इस प्रगति का लाभ समाज के सभी वर्गों तक नहीं पहुँच पाया। सरकार पर लगातार यह आरोप लगते रहे कि वह सत्ता के केंद्रीकरण की ओर बढ़ रही है, असहमति की आवाजों को दबा रही है और भ्रष्टाचार के मामलों पर आंख मूंदे हुए है। मीडिया की स्वतंत्रता सीमित होती गई और विपक्ष के लिए राजनीतिक जगह संकुचित होती चली गई।

सरकार के पतन की सबसे बड़ी वजह जुलाई 2024 में शुरू हुए छात्रों के नेतृत्व वाला आंदोलन था। यह विरोध उस समय तेज हुआ जब बांग्लादेश के सुप्रीम कोर्ट ने सरकारी नौकरियों में कोटा प्रणाली को फिर से बहाल कर दिया। इस व्यवस्था के तहत 1971 के स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने वाले योद्धाओं के वंशजों को 30 प्रतिशत आरक्षण दिया जाता था। छात्रों और युवाओं की मांग थी कि नौकरियाँ योग्यता के आधार पर दी जाएँ, न कि किसी वंशानुगत विशेषाधिकार के तहत। देशभर में व्यापक प्रदर्शन हुए और जब सरकार ने इन प्रदर्शनों को बलपूर्वक कुचलने की कोशिश की, तो हालात और बिगड़ गए। सरकारी कार्रवाई में कई छात्रों की मौत हो गई और सैकड़ों घायल हुए, जिससे जन आक्रोश चरम पर पहुँच गया।

इस असाधारण स्थिति में शेख हसीना को देश छोड़कर भारत आना पड़ा। बांग्लादेश की अदालतों ने उनके खिलाफ गिरफ्तारी वारंट जारी किया और अंतरिम सरकार ने भारत से उनके प्रत्यर्पण की औपचारिक मांग भी की है। इस घटनाक्रम ने भारत और बांग्लादेश के संबंधों को तनावपूर्ण बना दिया है। भारत में शेख हसीना की मौजूदगी और बांग्लादेश में हिंदू अल्पसंख्यकों पर हो रहे हमलों के विरोध में अगरतला स्थित बांग्लादेशी मिशन पर एक उग्र भीड़ ने दिसंबर 2024 में हमला कर दिया। वहीं, एक हिंदू धार्मिक नेता चिन्मय कृष्ण दास की गिरफ्तारी ने भारत में और अधिक आक्रोश उत्पन्न कर दिया।

शेख हसीना के जाने के बाद डॉ. मुहम्मद यूनुस के नेतृत्व में एक अंतरिम सरकार गठित की गई। यह सरकार न सिर्फ राजनीतिक स्थिरता लौटाने की चुनौती का सामना कर रही है, बल्कि देश की डांवाडोल अर्थव्यवस्था को भी संभालना उसका प्रमुख कार्य है। दिसंबर 2024 में अंतरिम सरकार ने अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) से पहले से जारी वित्तीय पैकेज के अतिरिक्त धन की मांग की, जिससे यह स्पष्ट हो गया कि आर्थिक संकट गहराता जा रहा है।

इन घटनाओं पर यूके सरकार की प्रतिक्रिया भी काफी अहम रही है। ब्रिटेन ने बांग्लादेश में लोकतांत्रिक मूल्यों के क्षरण और मानवाधिकारों के उल्लंघन पर गहरी चिंता जताई है। ब्रिटिश विदेश कार्यालय ने साफ कहा

शेष पृष्ठ 4 पर

बलात्कार के बाद फाँसी-क्या इतनी सजा काफी है?

वर्षा पाठक
हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार द्वितीय वर्ष

9 अगस्त 2024 एक ऐसा दर्दनाक दिन जिसने पूरे देश को हिला दिया। ऐसा नहीं है की यह घटना हमारे देश में पहली बार हो रही हैं। कोलकाता में जो कुछ हुआ है उससे सभी लोग परिचित हो चुके है । किस तरह कोलकाता के आर.जी. कर मेडिकल कॉलेज में एक 31 वर्षीय ट्रेनी डॉक्टर के साथ रेप कर उसे बुरी तरह तड़पाकर मार दिया गया। यह पूरी घटना हॉस्पिटल में ही घटती है और किसी को कुछ पता नहीं चलता है। जो डॉक्टर आज तक दूसरो की जान बचाते रहे। आज वह ऐसे हैवानों से खुद को नहीं बचा सकी।

कितनी अजीब बात है ,यह दर्दनाक घटना हमारे 78वे स्वतंत्रता दिवस के कुछ दिन पहले ही घटती है ।

शायद समाज व देश को बताने के लिए की हमारे देश को हर रूप में आजादी अवश्य मिली है , लेकिन महिलाओं को यह आजादी कभी नही मिल सकती। हर बार महिलाओं के साथ ऐसा कुछ जरूर होता है, जो उन्हें स्वतंत्र महसूस नहीं होने देता।

लड़किया आज खेल से लेकर पढ़ाई तक हर क्षेत्र में अवश्य आगे बढ़ रही है। लेकिन किसी भी क्षेत्र में खुद को सुरक्षित महसूस नही कर रही है । हमारे समाज में पल रहे ऐसे हैवानो के कारण शायद लड़कियों को यह आजादी कभी मिली ही नहीं पाएगी, चाहे वो 78 स्वतंत्रता दिवस हो या 79वां स्वतंत्रता दिवस।

ये हैवान तो मासूम बच्चियों तक को नहीं छोड़ रहे । आज एक बच्ची खुद के घर में सुरक्षित नही रहती हैं,बाहर की दुनिया से फिर क्या उम्मीद कर सकते है।

इस देश में स्कूल, हॉस्पिटल, कंपनिया यहां तक कि अपना घर... कोई ऐसी जगह नहीं बची जहा ऐसी दर्दनाक घटना न घटी हों ।

सबसे बड़े दुख की बात तो यह है की हमारा समाज ऐसी शर्मनाक घटनाओं के लिए स्त्री जाति को ही दोष देता है और फिर सारी पाबंदियां उन पर ही लगा दी जाती हैं। रात को घर से बाहर नहीं जाना , समय से घर आना, कही दूर नहीं जाना...ऐसे कपड़े मत पहनो आदि।

हमारे देश में तो एक दिन ऐसा नहीं जाता जिस दिन ऐसी खबरे न सुनी जाए । कभी किसी छोटी बच्ची के साथ तो कभी किसी महिला के साथ। इससे संबंधित कई घटनाएं तो ऐसी होती है जो हम लोगो तक पहुंच ही नहीं पाती। और जिन घटनाओं के बारे में पता चलता भी है तो उन महिलाओं

शेष पृष्ठ 4 पर

खालसा कॉलेज में नवागंतुक विद्यार्थियों के लिए स्वागत समारोह आयोजित

नई दिल्ली, 29 अगस्त 2024 श्री गुरु नानक देव खालसा कॉलेज (दिल्ली विश्वविद्यालय) के हिंदी विभाग द्वारा प्रथम वर्ष के नव आगंतुक विद्यार्थियों के लिए भव्य स्वागत समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर का उद्देश्य विद्यार्थियों को विभाग से परिचित कराना तथा उनके नए शैक्षणिक जीवन की शुरुआत को उत्साहपूर्ण बनाना था।

समारोह का शुभारंभ मंथन हिंदी साहित्य सभा के अध्यक्ष आशुतोष शर्मा एवं उपाध्यक्ष आयुषी कुमावत ने किया। अपने स्वागत भाषण में उन्होंने हिंदी विभाग की गरिमामयी परंपरा, उपलब्धियों और 'मंथन' की गतिविधियों का विस्तृत परिचय उपस्थित विद्यार्थियों को दिया। उन्होंने नवागंतुकों को विभागीय संस्कृति से अवगत कराते हुए उन्हें साहित्यिक गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित किया।

इस अवसर पर हिंदी विभाग के सभी प्राध्यापक प्रो. रेनू दुग्गल, डॉ. अमरजीत कौर, प्रो. दीपमाला (विभाग प्रभारी), डॉ. अंजुबाला, डॉ. शैलजा, डॉ. हरदीप कौर, डॉ. राज कुमार शर्मा (संयोजक–मंथन), डॉ. अर्चना, डॉ. सविलता यादव, श्री महेंद्र प्रताप सिंह तथा डॉ. रूद्रेश नारायण मिश्र उपस्थित रहे। सभी शिक्षकों ने विभाग की विविध शैक्षणिक एवं साहित्यिक गतिविधियों पर विद्यार्थियों से संवाद किया और उन्हें आत्मविश्वास के साथ अपने लक्ष्य की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित किया।

समारोह के दौरान विद्यार्थियों ने भी उत्साहपूर्वक भाग लिया और शिक्षकों से अनेक प्रश्न पूछे। शिक्षकों ने विद्यार्थियों की जिज्ञासाओं का उत्तर देते हुए उन्हें आश्वस्त किया कि कॉलेज जीवन के हर पड़ाव पर वे शिक्षकों का सहयोग और मार्गदर्शन प्राप्त करते रहेंगे।

यह स्वागत समारोह न केवल औपचारिक परिचय का अवसर बना, बल्कि छात्रों और शिक्षकों के बीच एक सार्थक संवाद की शुरुआत भी सिद्ध हुआ। आयोजन की सफलता से यह स्पष्ट हुआ कि हिंदी विभाग छात्रों के सर्वांगीण विकास हेतु सतत प्रयत्नशील है।

खालसा कॉलेज में धूमधाम से मनाया गया बॉलीवुड डे

श्री गुरु नानक देव खालसा कॉलेज, जो दिल्ली विश्वविद्यालय के अंतर्गत आता है, में 16 अक्टूबर 2024 को बॉलीवुड डे का आयोजन बड़े ही उत्साह और रंग–बिरंगे माहौल में किया गया। इस आयोजन का संचालन कॉलेज की आर्ट एंड कल्चर सोसाइटी द्वारा किया गया था। कार्यक्रम कॉलेज की पार्किंग एरिया में दोपहर 1 बजे से 3 बजे तक चला, जिसमें 25 छात्रों ने सक्रिय रूप से भाग लिया।

कार्यक्रम की शुरुआत हरनीत कौर के आत्मीय स्वागत भाषण से हुई, जिसके बाद एक के बाद एक शानदार सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ देखने को मिलीं। छात्रों ने बॉलीवुड के लोकप्रिय गानों पर पारंपरिक, आधुनिक और फ्यूजन शैलियों में मनमोहक नृत्य प्रस्तुत किए। कुछ छात्रों ने अपनी गायन प्रतिभा का भी प्रदर्शन करते हुए बॉलीवुड के मशहूर गीतों से समां बाँध दिया।

कार्यक्रम का एक विशेष आकर्षण रहा ष्कुछ कुछ होता हैष फिल्म पर आधारित स्किट प्रस्तुति, जिसे छात्रों ने हास्य और नाटकीय अंदाज में प्रस्तुत किया। दर्शकों ने इस प्रस्तुति का खूब आनंद लिया और तालियों की गूंज से कलाकारों का उत्साहवर्धन किया।

कार्यक्रम के अंतिम चरण में जजों द्वारा ''मिस्टर बॉलीवुड'' और ''मिस बॉलीवुड'' की घोषणा की गई। यह उपाधियाँ राज रघुवंशी और काजल चौधरी को प्रदान की गईं, जिन्हें उपस्थित छात्रों की तालियों और शुभकामनाओं ने और भी खास बना दिया। इस कार्यक्रम का समापन गगनप्रीत कौर के धन्यवाद भाषण से हुआ। पूरे आयोजन का कुशल संचालन ऋषिभा अग्रवाल ने किया।

बॉलीवुड डे 2024 न केवल एक मनोरंजक अनुभव रहा, बल्कि इसने छात्रों को अपनी प्रतिभा, रचनात्मकता और टीमवर्क प्रदर्शित करने का एक सुनहरा मंच भी प्रदान किया। यह दिन कॉलेज की यादगार घटनाओं में हमेशा के लिए शामिल हो गया।

हिंदी के भविष्य पर खालसा कॉलेज में विचार विमर्श

नई दिल्लीरू श्री गुरु नानक देव खालसा महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय के हिंदी तथा हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग की हिंदी साहित्य सभा श्मंथनश द्वारा दिनांक 17 अक्टूबर 2024 को "हिंदी का भविष्य और भविष्य की हिंदी" विषय पर व्याख्यान आयोजित किया गया। इस व्याख्यान में हिंदी भाषा और साहित्य में रोजगार की संभावनाओं, भविष्य की हिंदी, और अन्य महत्वपूर्ण विषयों पर गहन विमर्श किया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत शब्द वंदना, दीप प्रज्वलन और अतिथि स्वागत से हुई। दीपमाला के स्वागत भाषण के उपरांत, कार्यक्रम के मुख्य वक्ता डॉ. विपुल कुमार 'विपुल' रहे, जिन्होंने हिंदी भाषा और साहित्य के विविध आयामों पर विस्तार से विचार प्रस्तुत किए। डॉ. विपुल ने बताया कि पत्रकारिता में भाषा का गहन ज्ञान अत्यंत आवश्यक है, विशेषतः प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक और न्यू मीडिया जैसे क्षेत्रों में। उन्होंने छात्रों को यह समझाया कि हिंदी की बढ़ती मांग को देखते हुए मीडिया तथा अन्य क्षेत्रों में इसकी उपयोगिता अत्यंत बढ़ गई है। उन्होंने उदाहरण देकर स्पष्ट किया कि हिंदी न केवल पत्रकारिता बल्कि सरकारी क्षेत्रों, निजी संस्थानों और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी रोजगार का एक बड़ा माध्यम बन रही है।

उन्होंने यह भी कहा कि हिंदी का वर्तमान तकनीकी युग में अत्यंत प्रभावी उपयोग हो रहा है और छात्रों को अपने कौशल विकास पर ध्यान देना चाहिए। उन्होंने छात्रों को प्रेरित किया कि वे भविष्य की चुनौतियों का सामना करने के लिए अपनी क्षमताओं को और विस्तार दें। डॉ. विपुल ने यह जानकारी भी साझा की कि वर्तमान में 169 विदेशी विश्वविद्यालयों में हिंदी का अध्ययन हो रहा है और यह विश्व की दस प्रमुख भाषाओं में से एक बनने की ओर अग्रसर है।

इस अवसर पर महाविद्यालय के प्राचार्य, हिंदी तथा हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग के सभी शिक्षकगण और विद्यार्थी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन श्री महेंद्र प्रताप सिंह ने किया

यह व्याख्यान कार्यक्रम छात्रों के लिए अत्यंत प्रेरणादायक सिद्ध हुआ और हिंदी भाषा की वर्तमान भूमिका तथा उसके उज्जवल भविष्य को लेकर नई सोच प्रदान करने वाला रहा।

खालसा कॉलेज की आर्ट एंड कल्चर सोसाइटी ने स्चाई रंगारंग कार्यक्रम

दिनांक 25 नवम्बर को श्री गुरु नानक देव खालसा कॉलेज की आर्ट एंड कल्चर सोसायटी द्वारा नवप्रवेशी विद्यार्थियों के स्वागत में एक भव्य फ्रेशर्स पार्टी का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम कॉलेज परिसर में उत्साह और उल्लास के साथ संपन्न हुआ, जिसमें न केवल नवागंतुक छात्र–छात्राओं ने भाग लिया, बल्कि कॉलेज के शिक्षकगण और वरिष्ठ छात्र भी उपस्थित रहे।

कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्वलन और स्वागत भाषण से हुई। कॉलेज के प्राचार्य डॉ. बलजीत सिंह ने विद्यार्थियों को शुभकामनाएँ दीं और उन्हें शिक्षा के साथ–साथ सांस्कृतिक गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित किया।

फ्रेशर्स पार्टी में विद्यार्थियों ने नृत्य, गायन, मिमिक्री, कविता पाठ जैसी विभिन्न कलाओं की शानदार प्रस्तुतियाँ दीं। इन प्रस्तुतियों का मूल्यांकन निर्णायक मंडल द्वारा किया गया, जिन्होंने प्रत्येक प्रतिभागी को सकारात्मक प्रतिक्रिया और मार्गदर्शन प्रदान किया।

कार्यक्रम को और अधिक मनोरंजक बनाने के लिए विभिन्न रचनात्मक खेलों का आयोजन भी किया गया। इन खेलों के माध्यम से चरणबद्ध तरीके से प्रतिभागियों को एलिमिनेट किया गया, जिसके बाद अंत में आठ प्रतिभागी चयनित हुए। निर्णायकों ने इन आठ प्रतिभागियों से विभिन्न प्रश्न पूछे, जिनके उत्तरों के आधार पर उन्हें अलग–अलग उपाधियाँ प्रदान की गईं।

उपाधियों में मिस्टर फ्रेशर, मिस फ्रेशर, मिस्टर टैलेंटेड, मिस टैलेंटेड, मिस्टर कॉन्फिडेंट, मिस कॉन्फिडेंट, मिस्टर ड्रेसर और मिस ड्रेसर शामिल थीं। सभी चयनित प्रतिभागियों को स्मृति–चिह्न स्वरूप ट्रॉफियाँ प्रदान की गईं।

कार्यक्रम का समापन धन्यवाद ज्ञापन और समूह फोटो सत्र के साथ हुआ। पूरे आयोजन ने विद्यार्थियों को एक–दूसरे से जुड़ने, अपनी प्रतिभाओं को मंच पर प्रस्तुत करने और कॉलेज जीवन की नई शुरुआत को विशेष बनाने का अवसर प्रदान किया।

हिंदी और श्रेत्रीय भाषाओं की चुनौतियां

शिवम् पोरवाल
हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार तृतीय वर्ष

भारत की भाषाई विविधता उसकी सांस्कृतिक पहचान का मूल आधार है। यहाँ 22 अनुसूचित भाषाओं के अलावा सैकड़ों बोलियाँ और क्षेत्रीय भाषाएँ अपनी अनूठी विरासत को संजोए हुए हैं। लेकिन आजादी के बाद से ही "हिंदी थोपने" की राजनीतिक और सामाजिक बहस देश में लगातार गूंजती रही है। यह विषय केवल भाषाई अधिकारों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह राष्ट्रीय एकता और सांस्कृतिक संरक्षण से भी गहराई से जुड़ा हुआ है।

1949 में संविधान सभा ने हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया, साथ ही अंग्रेजी को 15 वर्षों के लिए सह–राजभाषा के रूप में मान्यता दी गई। परंतु 1965 में हिंदी को एकमात्र राजभाषा बनाए जाने के प्रस्ताव ने गैर–हिंदी भाषी राज्यों, विशेषकर तमिलनाडु में भारी विरोध को जन्म दिया। इस विरोध ने "हिंदी थोपने" की आशंकाओं को बल दिया, जिसके बाद अंग्रेजी को अनिश्चितकाल तक सह–राजभाषा के रूप में बनाए रखने का निर्णय लिया गया।

आज की स्थिति में क्षेत्रीय भाषाओं को कई प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। अंग्रेजी और हिंदी के वर्चस्व के कारण क्षेत्रीय भाषाएँ शिक्षा, प्रशासन और नौकरियों जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में पिछड़ती जा रही हैं। उदाहरण के लिए, उड़िया या मैथिली जैसी भाषाओं में उच्च शिक्षा के विकल्प बहुत सीमित हैं। इसके अतिरिक्त, युवा पीढ़ी धीरे–धीरे अपनी मातृभाषा से दूर होती जा रही है। वैश्वीकरण और डिजिटल मीडिया ने इस प्रवृत्ति को और तेज कर दिया है। कई राज्य सरकारें क्षेत्रीय भाषाओं के संरक्षण के लिए पर्याप्त बजट या योजनाएँ नहीं बनातीं, जिसके कारण ये भाषाएँ संकटग्रस्त हो गई हैं और विलुप्त होने की कगार पर पहुँच रही हैं।

हालाँकि हिंदी के पक्ष में भी कई तर्क प्रस्तुत किए जाते हैं। हिंदी को राष्ट्रीय एकता के सेतु के रूप में देखा जाता है क्योंकि यह देश के अधिकांश हिस्सों में संवाद का प्रमुख माध्यम बन सकती है। हिंदी भारत की सांस्कृतिक अभिव्यक्ति को वैश्विक स्तर पर प्रस्तुत करती आई है। हिंदी सिनेमा, साहित्य और मीडिया के माध्यम से यह भाषा एक वैश्विक पहचान प्राप्त कर चुकी है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 के तहत हिंदी को राजभाषा का दर्जा प्राप्त है। यदि हम इसे अपनाने और प्रोत्साहित करने की दिशा में काम करें, तो वह दिन दूर नहीं जब हिंदी विश्व की प्रमुख भाषाओं में शामिल होगी। इससे भारत के गायकों, कलाकारों, व्यापारियों और अन्य क्षेत्रों से जुड़े लोगों को भी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान और अवसर प्राप्त होंगे, जो देश के लिए लाभकारी सिद्ध हो सकता है।

आज आवश्यकता है संतुलन और समावेशी दृष्टिकोण अपनाने की। त्रिभाषा फॉर्मूला को प्रभावी ढंग से लागू किया जाना चाहिए, जिसमें हर राज्य में उसकी मातृभाषा के साथ हिंदी और अंग्रेजी को भी प्राथमिकता दी जाए। केरल जैसे राज्यों ने इस मॉडल को सफलतापूर्वक अपनाया है, जहाँ मलयालम के साथ–साथ हिंदी और अंग्रेजी को भी बढ़ावा दिया जाता है। भाषाई नीतियों में लचीलापन आवश्यक है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में मातृभाषा को प्राथमिक शिक्षा का माध्यम बनाने का जो सुझाव दिया गया है, वह सराहनीय है। इसके साथ ही, तकनीकी क्षेत्र में भी हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं की उपस्थिति बढ़ाई जानी चाहिए। जैसे टाटा स्टील द्वारा 'हो' भाषा में ऐप विकसित करना एक सकारात्मक उदाहरण है। इसके अतिरिक्त, बहुभाषी साहित्यिक समारोहों और मीडिया कार्यक्रमों के माध्यम से विभिन्न भाषाओं के बीच सांस्कृतिक संवाद को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

अंततः हमें "हिंदी थोपने" की बजाय ऐसा मॉडल विकसित करने की आवश्यकता है, जिसमें हिंदी राष्ट्रीय संपर्क भाषा के रूप में कार्य करे, लेकिन साथ ही क्षेत्रीय भाषाओं को उनकी मूल भूमि में सम्मान और संरक्षण भी मिले। महात्मा गांधी ने कहा था, "भाषाएँ हमें अलग नहीं, बल्कि समृद्ध करती हैं।" भारत की असली ताकत उसकी विविधता में निहित है, और इस विविधता को बचाए रखने के लिए भाषाई समावेशन ही एकमात्र उचित मार्ग है।

फिल्म समीक्षा : गोधारा कांड पर आधारित 'द साबरमती रिपोर्ट' में पत्रकारिता की विश्वसनीयता पर सवाल

आशुतोष शर्मा
हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार तृतीय वर्ष

भारतीय सिनेमा में सच्ची घटनाओं पर आधारित फिल्मों का प्रचलन तेजी से बढ़ रहा है। इस श्रेणी में एक नई फिल्म श्द साबरमती रिपोर्टर दस्तक दे चुकी है, जिसके टाईटल से ही पता लग रहा है कि इसकी कहानी गोधरा अग्निकांड पर आधारित है। यह फिल्म सच्ची घटनाओं से प्रेरित है। फिल्म में विक्रांत मैसी के अलावा ऋद्धि डोगरा और राशी खन्ना जैसे अनुभवी अभिनेता प्रमुख भूमिकाओं में नजर आएंगे।

फिल्म रिलीज से पहले ही विवादों में घिर चुकी है। यह एक आम बात हो गई है कि जब भी कोई फिल्म सच्ची घटनाओं पर आधारित होती है, तो कोई न कोई संगठन अपनी छवि को नुकसान पहुंचाने का आरोप लगाकर विवाद खड़ा कर देता है। मनोरंजन की पहचान बन चुकी फिल्मी दुनिया अब अतीत के उन पन्नों को उधेड़ने का दावा करने लगी है, जिनकी गूंज शायद लोगों के जेहन से मिट चुकी थी। इससे पहले भी 'द केरल स्टोरी', 'आर्टिकल 370', 'बस्तरः द नक्सल स्टोरी', 'माइनस 31', 'द नागपुर फाइल्स', 'स्वातंत्र्य वीर सावरकर', और 'द यूपी फाइल्स' जैसी कई फिल्में इसी प्रकार के विवादों का सामना कर चुकी हैं।

फिल्म 'द साबरमती रिपोर्ट' एक ऐसे कैमरामैन की कहानी है, जिसने भारतीय जनसंचार संस्थान (आईआईएमसी) से पत्रकारिता का कोर्स किया और एक बड़े न्यूज चौनल में मनोरंजन बीट कवर करने वाले हिंदी पत्रकार की नौकरी पाई। गोधरा के पास ट्रेन में लगी आग के मामले की कवरेज करने गई स्टार रिपोर्टर के साथ उसे कैमरामैन बनाकर भेजा जाता है, लेकिन वह 'मैडम' की शूटिंग करने के साथ–साथ हादसे के चंद पीड़ितों के ऐसे बयान भी रिकॉर्ड कर लाता है, जो प्रसारित हो जाते तो शायद ये फिल्म बनने की नौबत ही नहीं आती। वह बयान डीवीसी टेप पर रिकॉर्ड करता है। चौनल की लाइब्रेरी इसे बीटा टेप पर ट्रांसफर कर रखती है। बाद में यह बीटा टेप चैनल की नई महिला जर्नलिस्ट को मिलता है, जो इस पुराने हिंदी पत्रकार को तलाशने निकल पड़ती है। फिल्म यह भी दिखाती है कि गुजरात पुलिस के हाथ भी पैसे के मामले में खुले रहे हैं।

यह हिंदी पत्रकार समर कुमार (विक्रांत मैसी) नौकरी जाने के बाद सुबह–शाम शराब के नशे में धुत रहने लगता है। वह घर में काम करने आने वाली सहायिका के पर्स से पैसे चुराता है और घर चलाने के लिए डबिंग का काम करता है। इसी दौरान वह इस नई पत्रकार के साथ गोधरा जाने को तैयार हो जाता है। फिल्म बार–बार यह दोहराती है कि हिंदी पत्रकारों की समाज में कोई इज्जत नहीं है। उनकी बात कोई सुनता नहीं है। यह क्लाइमेक्स के लिए सेटअप है, जब अंग्रेजी चैनल की रिपोर्टिंग को हिंदी चौनल का यह पत्रकार गलत साबित करता है।

फिल्म 'द साबरमती रिपोर्ट' में नानावटी आयोग की रिपोर्ट, गुजरात हाईकोर्ट और सुप्रीम कोर्ट के फैसलों का भी हवाला दिया गया है। फिल्म 'एक्सीडेंट या कॉन्सपिरेसी गोधरा' की तरह यह दर्शकों को याद दिलाने की कोशिश करती है कि अयोध्या से लौट रहे 59 रामभक्तों को गोधरा में जिंदा जला दिया गया था। हालांकि, फिल्म में कुछ नाम ही स्क्रीन पर आते हैं, और यह सिलसिला अधूरा रह जाता है।

फिल्म का केंद्रबिंदु एंटरटेनमेंट बीट पर काम करने वाला हिंदी पत्रकार समर कुमार है। अंग्रेजी के पत्रकार उसे हेय दृष्टि से देखते हैं, जबकि उसी मीडिया हाउस की तेजतर्रार न्यूज एंकर मनिका राजपुरोहित (ऋद्धि डोगरा) का इंडस्ट्री में दबदबा है। फरवरी 2002 में हुए गोधरा कांड की रिपोर्टिंग करते हुए समर के हाथ कुछ ऐसे सबूत लगते हैं, जो इस घटना की सच्चाई सामने ला सकते हैं। हालांकि, मनिका अपने चैनल के बॉसेज के साथ मिलकर झूठी रिपोर्ट दिखाती है। समर इसका विरोध करता है और फुटेज वापस मांगता है। इस पर उसे चोरी के आरोप में नौकरी से निकाल दिया जाता है।

शेष पृष्ठ 4 पर

खुशहाली की कुंजी... (पृष्ठ 2 का शेष)

दृष्टिकोण हमें हर बार नई ऊर्जा के साथ आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है।

सकारात्मक सोच सफलता की दिशा में भी हमारा मार्गदर्शन करती है। सफलता केवल कठिन परिश्रम से नहीं, बल्कि सही दिशा में प्रयास करने से मिलती है। सकारात्मक सोच यह सुनिश्चित करती है कि हम अपने लक्ष्य की ओर निरंतर प्रेरित रहें और किसी भी कठिनाई में हार मानने के बजाय नए रास्ते खोजने का प्रयास करें। जब हम समस्याओं को सकारात्मक दृष्टिकोण से देखते हैं, तो उनके समाधान भी हमें जल्दी नजर आते हैं। इस सोच से हम हर परिस्थिति में समाधान की संभावना तलाशने लगते हैं और मानसिक रूप से स्वयं को तैयार करते हैं।

सकारात्मक सोच को अपनाने के लिए हमें कुछ सरल और प्रभावी उपायों को अपनी दिनचर्या में शामिल करना चाहिए। सबसे पहले, हमें जीवन में छोटी–छोटी खुशियों और उपलब्धियों के लिए आभार व्यक्त करना सीखना चाहिए। यह अभ्यास हमें हर परिस्थिति में अच्छाई देखने की आदत डालता है। इसके अलावा, आत्म–संवाद को सकारात्मक बनाना भी आवश्यक है। जब हम खुद से "मैं यह कर सकता हूँ" जैसे शब्दों का प्रयोग करते हैं, तो यह हमारी मानसिक शक्ति को बढ़ाता है और हमें लक्ष्य की ओर अग्रसर करता है।

नकारात्मक विचारों को सकारात्मक विचारों में बदलने की आदत भी सकारात्मक सोच को विकसित करती है। जब कोई नकारात्मक विचार आए, तो उसका सकारात्मक विकल्प ढूँढना चाहिए। इससे हम मानसिक रूप से सशक्त बनते हैं और अपनी ऊर्जा को लक्ष्य प्राप्ति में लगाते हैं। साथ ही, सकारात्मक और प्रेरणादायक लोगों के साथ रहना भी अत्यंत आवश्यक है। ऐसे लोग हमारे विचारों और दृष्टिकोण को नई दिशा देते हैं और उनके सहयोग से हम जीवन में नई प्रेरणा प्राप्त करते हैं।

अंततः, सकारात्मक सोच एक ऐसी जीवनशैली है, जिसे अपनाकर हम न केवल अपने जीवन को खुशहाल बना सकते हैं, बल्कि अपने चारों ओर भी एक प्रेरणादायक वातावरण का निर्माण कर सकते हैं। यह सोच हमें आत्मविश्वास, संतुलन और सफलता की ओर ले जाती है। आज के समय में, जब जीवन अनेक प्रकार की चुनौतियाँ प्रस्तुत करता है, तब सकारात्मक सोच ही वह शक्ति है जो हमें हर परिस्थिति में आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है। अतः हमें अपने विचारों को सकारात्मक बनाए रखने का सतत प्रयास करना चाहिए ताकि हम जीवन में न केवल सफल, बल्कि सुखी और संतुलित भी रह सकें।

सोशल मीडिया और समाज पर प्रभाव

सोनी सिंह
हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार तृतीय वर्ष

सोशल मीडिया या सामाजिक मीडिया वर्तमान समय में सभी के जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग बन चुका है। जिसके बिना प्रत्येक व्यक्ति अपने आप को अधूरा महसूस करने लगा है। सोशल मीडिया के प्रति इस प्रकार का बढ़ता लगाव लोगों को अपने आप पर निर्भर बना रहा है। सोशल मीडिया लोगों के लिए ना ही केवल शिक्षा और मनोरंजन का साधन है बल्कि आय तथा कार्यक्रम संचालन मंच का एक सुविधाजनक जरिया है। सोशल मीडिया लोगों के काम को आसान करता चला जा रहा है और अपनी तरफ लोगों को आकर्षित करता जा रहा है। यही मुख्य कारण है कि हमारी युवा इसके पीछे अपनी जिंदगी का एक कीमती वक्त गवाँ देती है। देखा जाए तो भारत में सोशल मीडिया की शुरुआत वर्ष 2004 में फेसबुक के आने से हुई थी। फेसबुक के आगमन से लोगों का सोशल मीडिया की तरफ आकर्षण बढ़ता नजर आया। धीरे–धीरे 2006 में यू ट्यूब जैसे सोशल मीडिया ऐप की शुरुआत हुई। जिसे लोगों ने भारी संख्या में इस्तेमाल किया और

मीडिया का बदलता स्वरूप

पलक गुप्ता
हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार प्रथम वर्ष

आज मीडिया हमारे जीवन का एक अभिन्न हिस्सा बन गया है। यह हमें केवल सूचना नहीं देता, बल्कि हमारे विचारों और समाज को भी एक आकार देता है। समय के साथ मीडिया के स्वरूप में कई परिवर्तन आए हैं। पहले हमारे मीडिया का दायरा समाचार पत्र–पत्रिकाओं, रेडियो और टेलीविजन तक सीमित था। ये माध्यम एकतरफा संचार पर आधारित थे, जहां समाचार और जानकारी दशकों तक पहुंचाई जाती थी, और दर्शक आमतौर पर कोई प्रतिक्रिया नहीं दे सकते थे।

लेकिन इंटरनेट और तकनीक के विकास के बाद मीडिया के क्षेत्र में एक अलग ही क्रांति आई। आज तरह–तरह की वेबसाइट, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म, ब्लॉग और ऑनलाइन वीडियो स्ट्रीमिंग सेवाएं हमारे समक्ष हैं। इस बदलाव ने मीडिया को एक नया जन्म दिया है। आज का मीडिया न केवल गतिशील हुआ है, बल्कि और भी ज्यादा इंटरएक्टिव बन गया है।

आज समाचार केवल पढ़े या देखे नहीं जाते, बल्कि साझा किए जाते हैं और उन पर दर्शक अपनी प्रतिक्रिया देते हैं। साथ ही, यह आम जनता के बीच चर्चाओं का विषय भी बनते हैं, जो देश के जागरूक नागरिकों को जन्म देने जैसा है। डिजिटलीकरण के बाद समाचारों और सूचनाओं के प्रसार को एक अतुलनीय गति प्राप्त हुई है, एक ऐसी गति जिसका अंदाजा लगाना बेहद मुश्किल है। आज घटनाएं घटित होते ही लगभग सभी लोगों तक तुरंत पहुंच जाती हैं। भिन्न–भिन्न तरह के सोशल मीडिया और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म्स ने दर्शकों को मीडिया से सीधा संवाद करने का अवसर प्रदान किया है। वे अपनी राय दे सकते हैं और चर्चाओं में भागीदारी निभा सकते हैं।

इसके अलावा, डिजिटल मीडिया ने सभी को अपने दृष्टिकोण को व्यक्त करने का एक मंच प्रदान किया है। अब कोई भी व्यक्ति अपनी बात दुनिया तक पहुंचा सकता है, चाहे पेशे से वह पत्रकार हो या आम नागरिक। इंटरनेट ने मीडिया को हर तरीके की सीमाओं से मुक्त कर दिया है। आज हम दुनिया के किसी भी कोने से जानकारी कभी भी प्राप्त कर सकते हैं तथा अपनी जानकारी उन तक पहुंचा सकते हैं। मीडिया का दायरा क्षेत्र से बड़ा है। आज मीडिया के जरिए पूरा विश्व एक–दूसरे से जुड़ा हुआ महसूस करता है। यही मीडिया है जो भारत में रहकर हमें विदेशों तक की जानकारी आसानी से दे सकता है। चाहे भारत और पाकिस्तान की लड़ाई हो या किसी अन्य दो देशों के बीच हुई कोई संधि, मीडिया हर विषय की जानकारी के साथ तत्काल ही हम सबके समक्ष प्रस्तुत है।

यानी यह कहना गलत नहीं होगा कि आज का मीडिया समय के साथ बदल रहा है। मगर प्रकृति का नियम है कि बदलाव के हमेशा दो पहलू होते हैं। एक सकारात्मक और दूसरा नकारात्मक। यदि इसके बदलाव में कुछ सकारात्मक पहलू हैं, तो साथ ही कुछ नकारात्मक पहलू भी हमें नजर आते हैं। जैसे कि मीडिया के बदलते स्वरूप के साथ कुछ चुनौतियां भी सामने आई हैं, जैसे गलत सूचना और फेक न्यूज का प्रसार, जो एक गंभीर समस्या के रूप में उभर रहा है और समाज में भ्रम और अविश्वास पैदा कर देता है। साथ ही, मीडिया का एक नकारात्मक प्रभाव यह भी है कि इससे लोगों की निजता का हनन हो रहा है, क्योंकि इंटरनेट के आने के बाद और डिजिटलीकरण होने के बाद, मीडिया और इंटरनेट भारी मात्रा में लोगों के व्यक्तिगत डेटा को एकत्रित कर रहे हैं।

अतः यह कहना गलत नहीं होगा कि मीडिया का स्वरूप लगातार बदल रहा है और इसके बदलाव को हमें स्वीकार करना होगा। इसके अवसरों का लाभ उठाने के साथ–साथ नकारात्मक पहलुओं को भी ध्यान में रखना होगा और गलत सूचना और फेक न्यूज से दूर रहना होगा। हमें एक जिम्मेदार नागरिक बनना होगा और खबरों को सही तरीके से एक–दूसरे के साथ साझा करना होगा। हमें मीडिया की चुनौती का सामना करना होगा और एक विश्वसनीय मीडिया के वातावरण को बढ़ावा देना होगा। कहते हैं, मीडिया लोकतंत्र का चौथा स्तंभ है, तो इस चौथे स्तंभ को हमें और मजबूत करना होगा और ऐसा साधन बनाना होगा जो समाज को सशक्त करे, सूचित करे और जोड़कर रखे।

सपनों का शहर

सूचना नंदा
हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार तृतीय वर्ष

सपनों का शहर, जिसे अक्सर हम कल्पना और साहित्य में देखते हैं, एक ऐसा स्थान है जहाँ अनगिनत उम्मीदों और इच्छाओं का संगम होता है। यह शहर किसी एक स्थान पर स्थित नहीं होता, बल्कि यह हर व्यक्ति के दिल और दिमाग में अपनी अलग परिभाषा लेकर आता है। इसे हम एक आदर्श स्थल मान सकते हैं, जहाँ हर किसी की चाहतें पूरी होती हैं, जहां हर किसी को अपनी मंजिल मिलती है। यह शहर उन सारे ख्वाबों का प्रतीक है, जिनकी हम लगातार तलाश करते रहते हैं। सपनों का शहर न केवल भौतिक रूप से बल्कि मानसिक रूप से भी हमारे जीवन का एक अभिन्न हिस्सा बन जाता है।

हमारे समाज में सपनों का शहर कई तरह से परिभाषित किया जा सकता है। यह शहर वह स्थान हो सकता है, जहाँ हमारी सभी इच्छाएँ पूरी होती हैं, जहाँ हम अपने सारे दुखों और परेशानियों से मुक्त होते हैं, और जहाँ हमारी जिंदगी का हर दिन एक नई उम्मीद और खुशी लेकर आता है। यहाँ हर व्यक्ति को अपनी मेहनत का फल मिलता है।

बांग्लादेश में सत्ता... (पृष्ठ 1 का शेष)

कि वह बांग्लादेश में सभी राजनीतिक दलों को समावेशी और स्वतंत्र चुनाव की दिशा में आगे बढ़ते देखना चाहता है। यूके ने छात्र आंदोलन के दौरान हुई हिंसा की निंदा की और पीड़ितों के लिए न्याय की मांग की। साथ ही, वह बांग्लादेश की अंतरिम सरकार के साथ संपर्क में है और आर्थिक एवं प्रशासनिक सुधारों में सहयोग की पेशकश कर चुका है।

ब्रिटेन में रह रहे बांग्लादेशी प्रवासियों ने भी इन घटनाओं पर अपनी तीव्र प्रतिक्रियाएँ दी हैं। कई जगहों पर हसीना सरकार के खिलाफ विरोध प्रदर्शन हुए और लोकतंत्र की बहाली की मांग उठाई गई। यह स्पष्ट है कि बांग्लादेश की घटनाएँ अब न सिर्फ क्षेत्रीय, बल्कि वैश्विक राजनीति का भी विषय बन चुकी हैं।

फिलहाल बांग्लादेश में संसद भंग है और नए चुनावों की कोई निश्चित तिथि तय नहीं की गई है। डॉ. यूनुस ने संकेत दिया है कि जब तक जरूरी चुनावी और प्रशासनिक सुधार लागू नहीं हो जाते, तब तक आम चुनाव संभव नहीं हैं। ऐसे में यह देखना दिलचस्प होगा कि अंतरिम सरकार कितनी पारदर्शिता और निष्पक्षता के साथ देश को स्थिरता की ओर ले जा पाती है, और क्या बांग्लादेश फिर से लोकतंत्र की पटरी पर लौट सकेगा।

बलात्कार के बाद... (पृष्ठ 1 का शेष)

को इंसाफ मिलने में कई साल बीत जाते हैं ।

दिल्ली के निर्भया गैंगरेप का मामला तो सबको याद होगा ।यह घटना 16 दिसंबर 2012 को घटी थी और निर्भया के गुनहगारों को सजा मिलनी में 7 साल का समय लग गया । उन आरोपियों को 20 मार्च 2020 को फांसी पर लटकाया गया ।

इसी तरह राजस्थान के अजमेर में 100 से भी ज्यादा छात्राओं के साथ दुष्कर्म करने वाले आरोपियों को 32 साल बाद उम्र कैद की सजा सुनाई गई है , जबकि यह घटना 1992 की है ।

ऐसी ही है हमारे देश की न्यायिक व्यवस्था । हमारी सरकार कितना भी कानूनों में बदलाव कर ले । आखिरकार अंत में होता क्या है ,उन हैवानों को ज्यादा से ज्यादा फांसी या उम्रकैद दी जाती है। क्या ऐसे दरिंदों के लिए इतनी आसान मौत काफी है ?

'द साबरमती रिपोर्ट'... (पृष्ठ 3 का शेष)

नौकरी और गर्लफ्रेंड दोनों खो चुका समर शराबी बन जाता है। लेकिन पांच साल बाद नानावटी आयोग की रिपोर्ट आने पर मनिका अपनी पोल खुलने के डर से चौनल की नई रिपोर्टर अमृता (राशी खन्ना) को गोधरा भेजती है, ताकि वह एक नई कहानी गढ़ सके। अमृता को समर की पुरानी फुटेज मिल जाती है। वह समर को ढूंढकर गोधरा कांड की सच्चाई उजागर करने का निर्णय लेती है। लेकिन क्या अमृता अपने मिशन में सफल होती है? क्या शराबी समर उसका साथ देता है? यह जानने के लिए फिल्म देखनी होगी।

विक्रांत मैसी ने अपने किरदार में गहराई से उतरते हुए अपने अभिनय से प्रभावित किया है। उनकी आंखों में उनकी पीड़ा झलकती है। रिद्धि डोगरा ने मैन्युपुलेटिव न्यूज एंकर के रूप में दमदार प्रदर्शन किया है। राशि खन्ना ने अपने किरदार के साथ न्याय किया, लेकिन उनके किरदार को और अधिक विकसित किया जा सकता था। सहयोगी कलाकारों के चरित्र चित्रण को उपेक्षित कर दिया गया है, जिससे वे कहानी को मजबूत आधार नहीं दे पाते।

तकनीकी पक्ष में ट्रेन जलने के दृश्यों में वीएफएक्स का सही उपयोग किया गया है। हालांकि, फिल्म का संगीत औसत है। फिल्म में तथ्यों से छेड़छाड़ की गई है। उदाहरण के लिए, गोधरा कांड के समय फिल्म में एक महिला मुख्यमंत्री को दिखाया गया है, जबकि यह सही नहीं है। फिल्म में विशेष समुदाय पर की गई टिप्पणियां और कुछ दृश्य हास्यास्पद लगते हैं। हिंदी बनाम अंग्रेजी पत्रकारिता की लड़ाई का चित्रण दर्शकों को उलझन में डालता है।

'द साबरमती रिपोर्ट' केवल एक घटना पर आधारित फिल्म नहीं है, बल्कि यह उस समाज की कहानी है, जो सत्य और झूठ के बीच अपनी जगह तलाशने की कोशिश कर रहा है। फिल्म पत्रकारिता की विश्वसनीयता पर गंभीर सवाल उठाती है, जहां खबरों को तोड़–मरोड़कर पेश करने की प्रवृत्ति सामने आती है। हालांकि, विवादों और तथ्यों से छेड़छाड़ के चलते फिल्म अपनी पकड़ कुछ हद तक खो देती है, लेकिन इसके शानदार अभिनय और कुछ प्रभावशाली दृश्यों के कारण यह दर्शकों को सोचने और अपने आसपास की सच्चाई पर विचार करने के लिए मजबूर करती है।

निर्देशन में धीरज सरना ने एक साहसिक कदम उठाया है, लेकिन कहानी के कुछ हिस्से संतुलन में थोड़े कमजोर लगते हैं और इसे प्रभावी रूप से प्रस्तुत करने में वे पूरी तरह सफल नहीं हो पाए। फिल्म पत्रकारिता पर सवाल उठाने का मौका देती है, जो भारतीय समाज के समक्ष एक चुनौती बनकर उभरता है।

सोशल मीडिया... (पृष्ठ 3 का शेष)

यूट्यूब भी लोगों के मनोरंजन का साधन बन गया। समय के साथ–साथ ट्विटर, इंस्टाग्राम, स्नैपचौट, टिंडर, टिक टोक आदि सोशल मीडिया एप्लीकेशंस आते रहे और लोग उस सोशल मीडिया के दुनिया में अंदर घुसते चले गए। माना कि सोशल मीडिया के अनगिनत फायदे हैं, जैसे इसके द्वारा लोग अपने दूर स्थित संबंधियों से जुड़े रहते हैं। इसके माध्यम से हम घर बैठे शिक्षा प्राप्त कर सकते है। एवं लाखों लोगों तक सूचना साझा कर सकते हैं। यह कहने में कोई दोहराय नहीं है कि जितने फायदे हैं उसे कम नुकसान भी नहीं है। सोशल मीडिया के द्वारा अफवाहों को बहुत आसानी से फैलने का मौका मिलता है। सोशल मीडिया पर लोगों की निर्भरता मनुष्य को आलसी बनती जा रही है। इस पर ज्यादा समय बिताने से युवा पथ भ्रमित होती जा रही है। सोशल मीडिया कई प्रकार के साइबर क्राइम को भी जन्म देता है।

मार्गदर्शक मंडल

संरक्षक : **प्रो. बलजीत सिंह,** कार्यवाहक प्राचार्य, श्री गुरु नानक देव खालसा कॉलेज
मार्गदर्शिका : **प्रो. दीपमाला,** विभाग प्रभारी, हिंदी और हिंदी प. एवं ज. विभाग

संपादक मंडल

संपादक : **डॉ रुद्रेश नारायण मिश्रा**, सहायक प्राध्यापक, हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग
छात्र संपादक : **अम्बर पांडेय**, बी.ए. (ऑनर्स) हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार, तृतीय वर्ष
सूचना नंदा, बी.ए. (ऑनर्स) हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार, तृतीय वर्ष
छात्र उप–संपादक : **पलक गुप्ता**, बी.ए. (ऑनर्स) हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार, प्रथम वर्ष
रुद्राक्ष शर्मा, बी.ए. (ऑनर्स) हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार, प्रथम वर्ष
छात्र सहायक संपादक : **शाश्वत सृजन,** बी.ए. (ऑनर्स) हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार, तृतीय वर्ष